मेरे पास परमेश्वर का प्रेम है जो मुझे अपनी धधकती आँखों के द्वारा सुरक्षा देता है।

क्वांगसप ली (उम्र 26, तीसरे युवा-वयस्क मिशन से)

जब मैं ग्यारह वर्ष का था, तब बिना किसी कारण के मेरे टखने में दर्द हुआ। मेरा परिवार आर्थिक रूप से मुश्किलों में था। मेरी माँ को बोझ महसूस न हो, इसलिए मैंने उन्हें कुछ नही बताया। दर्द बुरी तरह से बढ़ता गया। अन्ततः मैंने सीनियर पास्टर रेव. जेरॉक ली से प्रार्थनाओं को ग्रहण किया, और दर्द पूरी तरह से खत्म हो गया।

जब मैं माध्यमिक स्कूल में था, उस समय हमारी आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। हम मकान का किराया भी नही दे सकते थे इसलिए हमें वापस गाँव लौटना पड़ा।

किसी तरह से, सीनियर पास्टर को हमारी स्थिति के बारे में पता चला। उन्होंने मुझसे स्थिति के विषय में विस्तार से पूछा और उन्होंने आर्थिक रूप से हमारी मदद की, ताकि हम चर्च के पास रह सकें। परमेश्वर के प्रेम ने मेरे हृदय को भर दिया। और मैंने अपना मन बनाया कि मैं बाइबल के वचनो के अनुसार जीवन व्यतीत करूंगा और मेहनत से पढ़ाई करूंगा।

इसलिए अपने स्कूल के दिनों में, मैं उच्च स्तर पर बना रहा। मेरे माता-पिता मेरे कॉलेज के लिए पैसा नही दे सकते थे इसलिए मैं सीओल से दूर कॉलेज गया जहाँ मुझे पूरी स्कोलरशिप मिल सकें। जब मैंने अपने दो वर्ष पूरे कर लिए, उसके बाद में आर्मी में चला गया।

"परमेश्वर के वचनो को मानने पर हर क्षेत्र में आशीषें"

अप्रैल 2015 में मैंने सेना में जाने के लिए सीनियर पास्टर से प्रार्थना को ग्रहण किया और मैं नॉनसन नामक स्थान में बूट कैम्प में दाखिल हुआ। मुझे नए शिक्षार्थियों के लिए प्रशिक्षक के रूप में चुना गया। मुझे लिखित परिक्षा देनी पड़ी और शारीरिक जाँच परिक्षा एवं अधिकारियों के साथ बहुत प्रकार के साक्षात्कारों से गुज़रना पड़ा। मैं हर बार सीनियर पास्टर की शिक्षाओं को याद करते हुए तसल्ली के साथ उत्तर दे पाया और समस्त चीज़ों में उतीर्ण हो पाया।

प्रशिक्षक बनने के बाद मैं अपने हर दिन की शुरूआत और अन्त सीनियर पास्टर की स्वचलित रिकार्डीड प्रार्थना को ग्रहण करके करता था। क्योंकि मैं सेनानिवास में ऊँची आवाज़ में प्रार्थना नही कर पाता था इसलिए मैं प्रभु पर निर्भर होते हुए मूक प्रार्थना और आराधना अर्पित करता था। परमेश्वर के अनुग्रह के कारण मुझे सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षक का पुरस्कार दिया गया।

भर्ती हुए सैनिकों के रूप में अपने कार्यो को पूरा करने के बाद मैंने निर्णय लिया कि मैं अपना भविष्य सेना में ही अनायुक्त अधिकारी के रूप में बनाऊंगा।

जल्द ही मेरी पलटन के सेनाध्यक्ष ने मुझे अपने कर्मचारी वर्ग में नियुक्त कर दिया। मैंने जितना सोचा था, मेरा कार्य उससे कहीं अधिक मुश्किल और थकाने वाला था। मैं हमेशा सोचता था कि यदि सीनियर पास्टर इस परिस्थिति में होते तो क्या करते। और सीनियर पास्टर के विश्वास भरे कार्यों को याद करते हुए, मैं अपने पूरे हृदय से अपने से ऊँचे अधिकारियों की सेवा करता था।

जल्द ही मेरे आसपास के लोग कहने लगे कि जो कुछ भी सरजेंट ली हमसे कहेंगे हम उनके लिए करेंगे। और तीन बार मैंने पलटन के सेनाध्यक्ष का पुरस्कार प्राप्त किया।

"परमेश्वर का प्रेम मुझे अपनी धधकती आँखों के द्वारा सुरक्षा देता है"

2017 की सर्दियों में मुझे उतरी सीमा पर स्थानान्तरित कर दिया गया जो कि दक्षिणी कोरिया का सीमावर्ती क्षेत्र है। मैं परमेश्वर से मदद को प्राप्त करने के लिए सीनियर पास्टर के पास गया।

उन्होंने ये कहते हुए मेरे लिए प्रार्थना की "कि यह भाई उतरी सीमा पर जा रहें है, वह किसी बारूदी माइनज़ पर कदम न रखें, वह नई जगह के अनुसार ढलने पाए और उनके आसपास के लोग उन्हें पहचाने और उनसे प्रेम रखें।

जब मैं अपनी यूनिट पर पहुँचा तो मैं उतरी कोरिया के सेनिकों को बहुत करीब से देख सकता था। और वहाँ पर कोरियन युद्ध के दौरान बहुत सारी बारूदी माइनज़ खोदी गई थी।

एक दिन जब मैं बाड़े के पास पहरेदारी कर रहा था तो पाँच-सात मीटर की दूरी में मुझे धमाके की आवाज़ सुनाई दी। एक हिरण वहाँ मरा हुआ था। भारी बारीश के कारण ा माइनज़ खिसक गई थी और हिरण उसके ऊपर जा रहा था।

अगर हिरण वहाँ नही जाता तो यह मैं हो सकता था जो उस पर पैर रख सकता था। और मुझे सीनियर पास्टर की प्राथनाऐं याद आई और मैंने अपने हृदय की गहराई से परमेश्वर की सुरक्षा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया।

"सीनियर पास्टर की प्रार्थनाओं के द्वारा किडनी-पत्थरी से चंगाई"

सन 2018 में, बसन्त के दौरान मैं, अपने आगे के प्रशिक्षण के लिए, छः महीने के लिए एन सी ओ अकादमी में दाखिल हुआ। और हर सत्र के शुरू होने से पहले मैं मोबाइल फोन पर सीनियर पास्टर से प्रार्थनाओं को ग्रहण किया करता था। मुझे फिटनेस टैस्ट में अच्छे अंक मिलते थे और इस कारण हर सप्ताह मुझे रात के लिए पास मिल जाता था। इसलिए मैं सिओल आता था और चर्च में रविवार की आराधना सभा में शामिल होता था।

27 जुलाई को सुबह के समय मुझे पीला पेशाब आया और मेरी एक तरफ बहुत ही दर्द होने लग गया। मैं बेहोश होने वाला था। ऐंम्बुलैन्स में जाते समय भी यह दर्द हो रहा था। अपने प्रशिक्षक की सहायता से मैंने अपने मोबाइल फोन पर बीमारों के लिए प्रार्थनाओं को ग्रहण किया।

जल्द ही दर्द चला गया और मेडिकल जाँच में आया कि ये गुर्दे की पत्थरी के कारण हुआ था। और हैरान करने वाली बात यह थी कि, यह पत्थर पेशाब के साथ बहार आ गया था और मैं पूरी तरह से चंगा हो गया था।

"सीमा पर परमेश्वर का प्रेम और आशीषें"

सितम्बर 2018 में, जब मैंने आर्मी एन सी ओ में अपनी ट्रेनिंग को पूरी कर लिया, मैं सीमा पर वापस अपनी यूनिट में आ गया। ये निश्चित रूप से एक खतरनॉक जगह थी। लेकिन मैंने महसूस किया कि, मुझे कोई भी समस्या नही हुई क्योंकि मेरे साथ सीनियर पास्टर की प्रार्थनाऐं थी। और मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, जो मुझे सुरक्षा देता है।

अपने बचपन से जो संदेश, मैं सुनता आ रहा था उन के द्वारा मेरे जीवन में मेरी अगुवाई हुई और मैं धन्यवादी हूँ कि इनके कारण मैं हमेशा शान्ति में रहा।

जब मैं रात में पहरेदारी करता था, मैं मन ही मन प्रार्थना करता था। मैं नाईट-शिफ्ट के बाद थक जाता था, पर मुझे नींद नही आती थी, तब मैं सीनियर पास्टर की पुस्तकें पढ़ता था।

यदि रविवार के दिन मुझे छुट्टी मिलती थी तो मैं टैक्सी से ढाई घंटे की दूरी तय करके क्वायर में गाने के लिए पहुँच जाता था। यह सोचकर कि, मेरी स्तुतियों को परमेश्वर ग्रहण कर रहा है, मेरा हृदय आनन्द से भर जाता था और मैं सोचता हूँ कि मेरा टैक्सी का किराया व्यर्थ नही जाता था। शायद परमेश्वर की दृष्टि में ये अच्छा था और दिसम्बर के महीने में ही उसने मुझे दो पुरस्कार प्राप्त करने की आशीष दी।

हर दिन सीमा पर मानसिक तनाव और खतरा बना रहता है। परन्तु केवल मैं ही हूँ जो आनन्दित रहता हूँ क्योंकि मैं छोटी चीज़ में भी परमेश्वर के प्रेम को महसूस करता हूँ। मैं धन्यवादी हूँ और पिता परमेश्वर और प्रभु से प्रेम करता हूँ जिसने मेरे लिए कूस उठाया। और मैं कभी भी सीनियर पास्टर के प्रेम और अनुग्रह को नही भूलूंगा जो सदैव मेरे लिए प्रार्थना करते थे।

GCNTV HINDI
99716 24368
आप इन संदेशों को YouTube से सुन सकते है।
कूस का संदेश, विश्वास का परिमाण, आत्मिक प्रेम, भलाई, स्वर्ग, पवित्र आत्मा के नौ फल, आशीषें, नरक, हृदय भूमी की जुताई।
आप GCNTV HINDIको YouTube पर ढूंढ सकते है।
Hindi Live Service
Sun 1) 8:00 am - 9:30 am
2) 11:30 am - 1:30 pm
Fri 8:00 pm - 10:30 pm
Wed 6:00 pm - 7:00 pm

मानमिन समाचार

रजि.न. DELHIN/2016/70497 साप्ताहिक

अकं 44, वर्ष 3 5 April 2019 पेज 1

▼ चंगाई से पहले एम आर आई
2 और 3 नम्बर की थोरासिक बर्टेबरे क्षतिग्रस्त है।

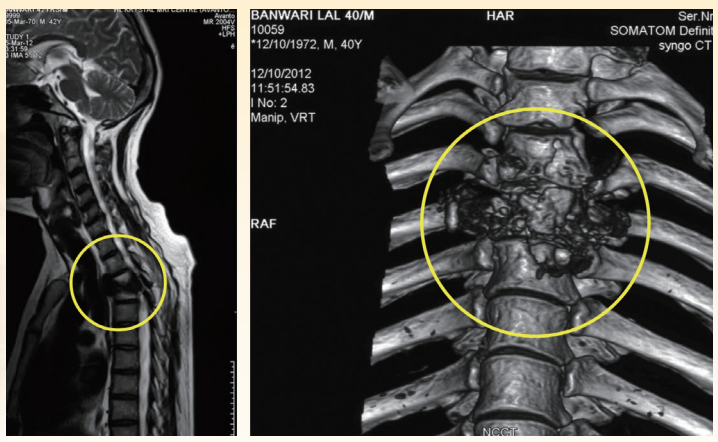

बनवारी लाल, उम्र 48 वर्ष, दिल्ली मानमिन चर्च, स्पोंडेलाइटिस टयूबरकुलोसा सर्ज़री गलत होने के कारण उनका शरीर का निचला हिस्सा लगवाग्रस्त हो चुका था और उन्हें पूरे जीवनभर इस तरह की दशा में रहना था। मगर, उनका बेटा जो परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा मिरगी से चंगा हुआ था, वह उनके सामने, रेव. डा. जेरॉक ली द्वारा लिखित पुस्तक "कूस का संदेश" को ऊँची आवाज़ में पढ़ता था, और उन्हें विश्वास प्राप्त हुआ। अपने परिवार को नाराज़ करने के लिए उन्होंने पश्चाताप किया और प्रार्थनाओं को प्राप्त किया। अब वह चंगे हो चुके है और एक स्वस्थ जीवन जी रहें है।

मैंने कभी न ठीक होने वाली विकलांगता से चंगाई प्राप्त की।

40 की उम्र में मैं अपंग हो गया था। 2012 की बात है जब मैं एक इंजीनियर के रूप में एक कारखाने में काम करता था। मुझे सपोंडेलाइटिस ट्यूबरकुलोसा हो गया और मार्च में मेरी सर्ज़री हुई। परन्तु सर्ज़री गलत होने के कारण मेरा निचला शरीर लकवाग्रस्त हो गया। उसके बाद मैं अपने परिवार की मदद करने में असमर्थ हो गया। मैं हर वक्त बिस्तर पर लेटा रहता था। मुझे कोई भी मार्ग नही दिख रहा था, और मेरे हृदय का बोझ और दर्द बयां से बहार था।

जीने के लिए मेरी पत्नी काम करने लग गई। मेरे बेटे को भी मिरगी के दौरे पड़ते थे। उसे गंभीर सिर दर्द, चक्कर, और दौरे पड़ते थे। इस कारण वह ठीक से स्कूल भी नही जा पाया। हमने उसका अच्छा इलाज कराया और हिन्दु मंदिरों में जाकर कुछ अनुष्ठान भी कराए परन्तु सबकुछ बेकार ही गया। उसकी स्थिति और भी बिगड़ गई थी।

मगर, एक दिन कुछ अदभुत बात मुझे देखने को मिली। मेरी पत्नी ने हमारे पड़ोसियों के द्वारा सुसमाचार को सुना और उन्होंने दिल्ली मानमिन चर्च के पास्टर को हमारे घर आने को कहा। उन्होंने हमें परमेश्वर का सामर्थ्य विडियो को दिखाया।

मुझे यह देखकर हैरानी हुई की किस प्रकार से लोग असाध्य रोगों से चंगे हुए है और मैं भी चंगाई पाना चाहता था। तब से, पास्टर हमारे घर नियमित रूप से आने लगे, और उस रूमाल के द्वारा प्रार्थना की जिस पर मानमिन सेंट्रल चर्च के सीनियर पास्टर रेव. डा. जेरॉक ली ने प्रार्थना की थी। (प्रेरितों के काम 19:11–12)

जून 2012 से मेरे परिवार ने चर्च जाना शुरू कर दिया था परन्तु मैं अपनी विकलांगता के कारण नही जा पाता था। मैं घर पर ही रहता था। इसलिए, मेरा बेटा रेव. डा. जेरॉक ली की लिखित पुस्तक कूस का संदेश मेरे लिए हर दिन पढ़ता था। हैरानी की बात यह थी कि जब वह ऐसा कर रहा था, उसका सिर दर्द ठीक हो गया।

एक दिन, मैंने एक सपना देखा कि मेरा परिवार हवा में उठा लिया गया है परन्तु मैं अकेले ही पीछे छूट गया हूँ और प्रभु को पुकार रहा हूँ। मुझे परमेश्वर का वचन याद आया जो हमसे कहता है कि, हम प्रेम रखें और मेंल–मिलाप रखें, इसलिए मैंने अपने क्रोध के लिए और पैसो के बारे में अपने भाईयों के साथ चल रहें विवाद के लिए पश्चाताप किया।

फरवरी 2013 में, मैंने सामर्थी रूमाल की प्रार्थना को ग्रहण किया और मेरे निचले शरीर में कुछ अनुभूति हुई और मैं हिल भी पाया। मेरी मृतक नसों में जान पड़ गई। बाद में, मैं किसी के सहारे चर्च गया, और चर्च के पोडियम के पृष्टपट पर लगे बैनर में, हवा में उठाए जाने के दृश्य को देखकर मैं दंग रह गया क्योंकि यही दृश्य मैंने अपने सपने में देखा था।

जैसे जैसे मैं चर्च जाने लगा, मेरी स्थिति में सुधार होने लग गया। नवम्बर 2014 में, रविवार की सुबह की सभा में, जी सी एन पर सीधे प्रसारण के द्वारा मैंने, बीमारों के लिए सीनियर पास्टर की प्रार्थनाओं को ग्रहण किया, और मैं पूरी तरह से चंगा हो गया।

अब मैं सामान्य लोगों के समान चल फिर सकता हूँ और चर्च में भी हर सप्ताह भोजनकक्ष में स्वयंसेवा देता हूँ। साथ ही, मुझे तीन पहिया गाड़ी खरीदने की आशीष भी प्राप्त हुई, इससे मेरी आमदनी भी बढ़ गई तब से मेरा दशंमाश भी दोगुना हो गया। हम बस्तियों में रहते थे परन्तु हमें नये घर की आशीष भी प्राप्त हुई। मुझे ऐसा लगता है जैसे मानों मैं सपना देख रहा हूँ।

इससे भी बढ़कर, मेरा बेटा मिरगी से चंगा हो गया जिससे वह दस वर्षों से पीडित था। वह चर्च में ड्रम बजाता है।

रूमाल की प्रार्थनाओं के द्वारा मेरी पहली बेटी ने बुखार से चंगाई प्राप्त की और मेरी पत्नी ने पूरे शरीर कें दर्द से चंगाई प्राप्त की। वह चर्च में सेवा देती है और पड़ोसियों में भी सुसमाचार का प्रचार करती है।

पूरे परिवार के द्वारा प्रभु को ग्रहण करने के बाद, हमने स्वास्थ्य, आर्थिक एवं खुशियों की आशीषें पाई है। हम सारा धन्यवाद और महिमा जीवित सृष्टिकर्ता परमेश्वर को देते है।

स्वामी–मानमिन सेंटर दिल्ली के लिए, प्रकाशिक मुद्रक : रवि आगस्टीन के द्वारा, डान बोस्को फॉर प्रिंटिंग एंड ग्राफिक ट्रेनिंग डोन बोस्को टेक्निकल इंस्टीच्युट ओखला रोड दिल्ली 110025 सुखदेव मेट्रो स्टेशन के पास, से मुद्रित एंव 24 सी, पोकेट–ए, जी टी बी एन्क्लेव दिल्ली 110093 से प्रकाशित, संपादक – रवि आगस्टीन

आत्मिक प्रेम (4)

प्रेम डाह नही करता

" प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता;
प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।"
(1 कुरिन्थियों 13:4)

सीनियर पास्टर रेव. जेरॉक ली।

वे छात्र जो अच्छे अंक प्राप्त करते है, वो ज्यादातर वे छात्र होते है जो अपनी बीती परिक्षाओं को जांचते है और उनमें सुधार करते है। यह एक प्रभावी तरीका है जिसके द्वारा हम अपनी कमज़ोर चीज़ों को सुधार सकते है।

यही सिद्धांत ऐसे ही आत्मिक प्रेम पर भी लागू होता है। परमेश्वर के वचनो को सुन कर, हमें यह जाँचने की कोशिश करनी चाहिए कि, धीरज, दीनता और नेक उदारता के विषय में हमारे अंदर क्या कमियां है। तो हम आत्मिक प्रेम को थोड़े समय में ही जोत सकते है।

आत्मिक प्रेम की एक विषेशता जिसके बारे में हम अब बातचीत करेंगे वह यह है कि प्रेम डाह नही करता। यहाँ पर, डाह करने का अर्थ, दूसरों के प्रति इतनी अत्यंत ईर्ष्या और डाह रखना कि हम उसके विरूद्ध बुराई के कार्य प्रकट करते है।

अगर हमारे पास डाह है, तो जो हम से अधिक धनी और दूसरों से अधिक प्रेम पाते है, हम उनसे असुविधाजनक महसूस करते है। जो दूसरे हमसे धनी, ज्यादा शिक्षित, ज्यादा योग्य होते है हमें ऐसा लगाता है कि हमारे स्वाभिमान को ठेस पँहुची है। जो हमारे समान होते है हम उनसे ईर्ष्या रखते है जब वे समृद्ध होते है। कभी–कभी हम उनसे नफरत भी कर सकते है और जो कुछ उनके पास है उनसे लेने की इच्छा रखते है।

दूसरे पहलू में, हम ऐसा भी सोच सकते है " क्यों उसे प्रेम मिल रहा है और मुझे नही" हम निराश भी हो सकते है यदि हम अपने आप की तुलना उनसे करते है। बहुत से लोग ये नही सोचते कि निराश होना ईर्ष्या या डाह का ही रूप है।

तौभी, अगर हमारे पास आत्मिक प्रेम है, तो हम निराश नही होंगे लेकिन उनके लिए आंनदित होंगे। निराश होना और अपने आपको मारना यह हमारे उस अंहकार के कारण आता है, जो प्रेम पाना चाहता है और दूसरों से ज्यादा पहचान पाना चाहता है।

परन्तु डाह, जिसके बारे में यह अध्याय जिक्र करता है वो इससे कहीं अधिक है। जिसके कारण हमारी बाते एवं व्यवहार बुरा हो जाता है। आइये, अब हम डाह को कई श्रेणियों में देखें।

1. प्रेमपूर्ण संबंध के कारण डाह

याकूब, जो अब्राहम का पोता और इसहाक का पुत्र था, उसकी दो पत्नियाँ थी जिनका नाम लिआ और राहेल था। वे याकूब के मामा लाबान की बेटियां थी और आपस में बहनें थी। उसके मामा के धाखे के कारण, याकूब का विवाह राहेल को छोड़ अनिच्छापूर्वक, लिआ से करा दिया गया। परन्तु तौभी, राहेल से प्रेम के कारण उसे पत्नी बनाने के लिए, उसने लाबान की कुल चौहद वर्षो तक सेवा की। साफ तौर से, याकूब लिआ से बढ़कर राहेल को प्रेम करता था।

जब लिया ने चार पुत्रों को जन्म दिया उस समय राहेल के पास कोई संतान नही थी। राहेल अपनी बहन लिया से डाह रखती थी (उत्पति 30:1)। लिआ और राहेल याकूब से प्रेम पाने के लिए एक दूसरे का प्रतिवाद करती थी। यहां तक कि उन्होंने अपनी दासियों को भी उसे रखैल के रूप में दे दिया था।

अगर उनके पास एक दूसरे के लिए थोड़ा सा भी आत्मिक प्रेम होता तो, याकूब उनमें से किसी से भी प्रेम करें तौभी उन्हें खुशी होती।

2. डाह, जब दूसरे हम से बेहतर होते है।

लोगों के विभिन्न मूल्य–तंत्र होते है, और इसलिए, वे कई चीज़ों के लिए डाह महसूस करते है। मगर, आमतौर पर लोग दूसरे से डाह तब रखते है जब दूसरे उनसे अधिक संपन्न, सुंदर, अधिक सक्षम या अधिक प्रिय और अधिक पहचान बनाते है। ऐसी स्थितियां हमें हमारे घर, कार्यस्थलों एवं स्कूल में देखने को मिल सकती है।

कुछ लोग अपने कार्यस्थलों में अपनी उन्नति पाने के लिए दूसरों की कमज़ोरियों का ढिंढोरा पिटते है या उन्हें फसाते है। कुछ छात्र दूसरे छात्रों को, जो उन से अधिक तेज़ होते है और जिनसे अध्यापक भी प्रेम करते है, उन्हें डराते है। परिवारो में भी, भाई–बहनों में इस बात पर झगड़े होते है कि उन्हें उनके माता–पिता से अधिक प्रेम व विरासत में अधिक पैसा मिल सकें।

हम मानव–जाति में पहले खूनी कैन को ही देख लें। जब परमेश्वर ने केवल उसके भाई हाबिल की ही भेंट ग्रहण की तो वह अपनी डाह पर काबू नही रख पाया और हाबिल को मार दिया।

उसने अवश्य ही अपने माता–पिता से सीखा होगा कि उसे जानवरों के लहू की बलि देनी चाहिए थी, परन्तु उसने ऐसा नही किया। हाबिल ने परमेश्वर की इच्छा का पालन किया और लहू की बलि अपर्ण की और परमेश्वर ने उसकी भेंट ग्रहण की। तौभी कैन ने इस बात को अपनी गलती नही माना, बल्कि अपनी डाह को बढ़ावा दिया और परिणाम स्वरूप उसने अपने भाई को ही मार दिया।

3 विश्वासी भाईयों में डाह

कुछ विश्वासी भी एक दूसरे से डाह रख सकते है यदि उन्हें लगें कि दूसरा विश्वासी, विश्वास में उनसे आगे बढ़ रहा है या फिर चर्च में उसका पद ऊँचा है। आमतौर पर ऐसा तब होता है जब लोग एक ही उम्र के या चर्च में समान पद पर होते है, या जब वे एक दूसरे को बहुत अच्छे से जानते है। हॉलाकि उन्होंने हमारा कोई नुकसान नही किया तौभी हम उनके लिए असुविधाजनक महसूस कर सकते है। हम ऐसा महसूस कर सकते है कि, वह तो मुझसे बेहतर नही है परन्तु तौभी वह मुझसे अधिक प्रिय और जाना–पहचाना जाता है। इसलिए हमें असंतोषजनक महसूस होता है।

ऐसे लोग यदि क्रम में हम से आगे है तो हम उनका अनुसरण नही कर पाऐंगे। ऐसा भी हो सकता है कि हम उनकी गलतियों को दूसरों में फैला सकते है और उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश कर सकते है। यदि कोई हम से कम उम्र का हो या कम अनुभवी हो और वह हम से ऊँचे पद को प्राप्त करें तो हम उसके विरूद्ध अत्यधिक डाह रख सकते है।

राजा शाऊल के लिए, दाऊद एक महान सहायक व्यक्ति था जिसने उसके राज्य को बचाया था। मगर, युद्ध से वापस लौटते समय जब लोगों ने शाऊल से बढ़कर दाऊद की प्रशसां की (1 शमूएल 18:7) तो शाऊल को इतनी डाह हुई कि वह दाऊद को मारना चाहता था। आखिरकार जब तक उसने अपने आप को पलिशतियों के विरूद्ध हो रहें युद्ध में मार न दिया तब तक उसकी डाह के चलते उसे कभी शान्ति ही नही मिली।

गिनती 16 अध्याय में, कोरह, दातान और अबीराम, मूसा के लिए द्वेष रखते थे। उन्हें लगता था कि मूसा और हारून अन्यायिक तरीके से उन पर अधिकार जमाते थे और वे स्वयं से राहनुमा बनना चाहते थे। उन्होंने कुछ लोगों को संपर्क किया और 250 लोगों को अपनी ओर फेर दिया। उन्होंने सोचा कि वे अपना नियंत्रण जमा पाऐंगे और वे मूसा और हारून का सामना करने को आए (गिनती 16:3)

मूसा ने उन्हें कुछ नही कहा जब वे उस पर बहुत सी बातों में झूठा दोष लगा रहें थे। उसने घुटने टेक कर परमेश्वर के सामने प्रार्थना की। तब उसने उनके पापों को दर्शाया और परमेश्वर से उनका न्याय करने की मांग की। परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का। भूमी उन्हें निगलने के लिए फट गई और उनका हर एक व्यक्ति और हर एक वस्तु उसमें चली गई। और वे 250 लोग जो उनकी ओर हो गए थे वे आग से भस्म हो गए।

परमेश्वर ने सभी लोगों को दिखाया कि मूसा से डाह रखना, यह कितना संगीन पाप था। परमेश्वर के जन पर दोष लगाना, परमेश्वर पर ही दोष लगाने के बराबर है।

विश्वास का अंगीकार

1. मानमिन सैंट्रल चर्च विश्वास करता है कि बाइबल परमेश्वर का दिया गया वचन है जो सिद्ध और दोषरहित है।
2. मानमिन सैंट्रल चर्च एकता में विश्वास करता है और त्रिएक परमेश्वरः पवित्र पिता परमेश्वर, पवित्र पुत्र परमेश्वर और पवित्रआत्मा परमेश्वर, के कार्य में विश्वास करता है।
3. मानमिन सैंट्रल चर्च विश्वास करता है कि केवल यीशु मसीह के लहू के द्वारा हमें हमारे पापों से क्षमा मिलती है।
4. मानमिन सैंट्रल चर्च यीशु मसीह के पुन्रूत्थान और स्वर्गारोहण, उसके दूसरे आगमन, एक हजार वर्ष का राज्य और अनन्त स्वर्ग, पर विश्वास करता है।
5. मानमिन सैंट्रल चर्च के सदस्य हर बार जब एकत्र होतें है वे अपने विश्वास का अंगीकार "प्रेरितों के विश्वास" के द्वारा करतें है और उसकी धारण के मूल तत्व के प्रतिशब्द पर विश्वास करतें है।

"(परमेश्वर) वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।" (प्रेरितों के काम 17:25)
"और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों के काम 4:12)

आप इन संदेशों को YouTube से सुन सकते हैं
कूस का संदेश, विश्वास का परिमाण, आत्मिक प्रेम, भलाई, स्वर्ग, पवित्र आत्मा के नौ फल, आशीषें, नरक, हृदय भूमी की जुताई।
आप GCNTV HINDI को YouTube पर ढूंढ सकते है।
YouTube / GCNTVHINDI

4. व्यर्थ चीज़ों के लिए डाह करने की मूर्खता

तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, ओर कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झगड़ते और लड़ते हो; तुम्हें इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं। (याकूब 4:2)

डाह करने से जो कुछ हम चाहते है, कभी प्राप्त नही कर सकते डाह करने से ऐसा लग सकता है कि हम दूसरों को खुद से नीचे गिरा रहें है परन्तु वह उल्टा हमारे ऊपर ही लौट आएगा। हम बीमार हो सकते है या परिवार व कार्य में विपति का सामना कर सकते है।

डाह हमें नुकसान करती है। यह हर पहलू में हानिकारक है। यदि हम दूसरों से आगे बढ़ना चाहतें है तो हमें डाह नही करनी चाहिए बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर से मांगना चाहिए। ज्यादातर लोग, अपनी सुविधा और घमंड के लिए, संपति, विख्याति, और ताकत पाने की कोशिश करते है। जबकि, सबसे महत्वपूर्ण आशीष हमारे प्राण की संपन्नता है।

चाहे हमारे पास बहुत सारी वस्तुऐं क्यों न हो परन्तु यदि हमारा प्राण न बच पाऐं तो किस काम की है। हमें इस बात को याद रखना है कि जो कुछ भी इस संसार में है वो सब व्यर्थ है और धुंध के समान गायब हो जाता है। (सभोपदेशक 12:8)

5. डाह बनाम आत्मिक इच्छा

हम डाह करते है उसका कारण यह है कि हमारा विश्वास छोटा है और हमारे पास प्रेम की कमी है। यदि परमेश्वर पर और स्वर्गीय राज्य के लिए हमारा विश्वास छोटा है और प्रेम की कमी है तो हम उन लोगों से ईर्ष्या कर सकते है जो इस संसार में, धनी, विख्यात और ताकतवर है।

यदि हमारे पास यह दृढ़ विश्वास है कि हम परमेश्वर की संतान है और हमारे पास स्वर्गीय राज्य की नागरिकता है, तो हम यह भी विश्वास करते है कि विश्वासी भाई, बहनों के साथ हम स्वर्ग में सदाकाल के लिए निवास करेंगे। हमारे पास यह भी दृढ़ विश्वास होगा कि अविश्वासी भी बहुमूल्य प्राण है जिनकी हमें उद्धार की ओर अगुवाई करनी है।

जिस सीमा तक हमारे पास सच्चा विश्वास होगा, उसी सीमा तक हम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखेंगे और इस तरह से, हम आनंदित होते है जब दूसरे सफल होते है।

जिनके पास विश्वास होता है वे संसार की व्यर्थ चीज़ों की खोज में नही रहते। वे केवल प्रभु की सेवा करने का प्रयास करते है ताकि वे बेहतर स्वर्गीय निवास स्थानों पर जोर करके उन्हें ले सके। यह आत्मिक इच्छा है (मती 11:12)। आत्मिक इच्छा डाह से भिन्न होती है।

यह अच्छा है कि हम प्रभु के कार्य की धुन रखें और जितना अधिक हो सके बदल जाऐं। मगर, यह धुन सत्य से भटकनी नही चाहिए जिसके कारण दूसरे ठोकर खांए। मुझे आशा है कि स्वयं को छोड़ आप दूसरो के हित की सेवा करते हुए मेंल–मिलाप रखते हुए आत्मिक प्रेम की जुताई करेंगे।

प्रिय भाईयों और बहनो,

1 यूहन्ना 2:17 कहता है, और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा। मगर डाह, बुराई और गंदगी है और जो डाह रखते है उनके लिए उद्धार पाना मुश्किल है। यह इसलिए क्योंकि यह बाहरी रूप से दृश्य पाप है।

अतः मैं प्रभु के नाम से प्रार्थना करता हूँ कि आप संसार की व्यर्थ चीज़ो में अड़िग रहने के द्वारा दूसरों से ईर्ष्या और डाह नही रखेंगे बल्कि परमेश्वर के प्रेम को अपने हृदय में जोत लेंगे ताकि आप अनन्त स्वर्गीय राज्य को बलपूर्वक छीन लें और अपने हृदय की इच्छाऐं प्राप्त करें।

1 कुरिन्थियों 12 अध्याय में नौ वरदान

01 बुद्धि का वचन

जिन लोगों में बदलने की थोड़ी सी भी संभावना होती है, उन्हें उचित तरीके से परमेश्वर के वचन को प्रचार करने के द्वारा आप उन्हें तेज़ी से बदल सकतें है। आप उन में विश्वास बो सकते है और उन्हें स्वर्ग की आशा दे सकते है, ताकि वे संसार को जीत सकें। जिस सीमा तक आप पवित्र हो आप उसी सीमा तक परमेश्वर से बुद्धि प्राप्त कर सकते हैं। यह दान आप को प्रभु में कुछ भी करने के योग्य बनाएगा।

02 ज्ञान का वचन

यदि आप वचन को आत्मिक रूप से न समझे तो आपका ज्ञान केवल वचन का ज्ञान शब्दों का ज्ञान होगा। क्योंकि आप सच्चा अर्थ नही समझ पाते इस कारण आप परमेश्वर के हृदय और प्रेम को महसूस नही कर सकते इस दान के द्वारा आप बाइबल की 66 पुस्तकों के आत्मिक अर्थ को समझ सकते है और उन्हें अपनी आत्मिक रोटी बना सकते है, ताकि आप उनका अभ्यास कर सकें और परमेश्वर के कार्यों का अनुभव कर सकें।

03 विश्वास

परमेश्वर द्वारा दिये जाने वाले विश्वास को पाने के लिए, हमने जो वचन सुने है, उन का अभ्यास करना पड़ता है। और इसके लिए हमें पवित्रआत्मा की ज़रूरत पड़ती हैं। वचन सुनकर जब आप अपनी कमियों और पापों का एहसास करते है, तो आप उन्हें शीघ्र ही दूर कर सकते है, यदि आप के पास भला हृदय है। जब आप कुछ अनुभव करते है या जीवित परमेश्वर के प्रमाण देखते है, तो आप उसे अपने विश्वास के रूप में ग्रहण करते है, ऐसा इसलिए है क्योंकि आप के पास विश्वास का दान है।

04 चंगाई का दान

रोगाणुओं और विषाणुओं द्वारा उत्पन्न बीमारियों को इसके द्वारा चंगा किया जाता है। यदि आप निरंतर पश्चाताप करें और जिसके पास यह दान है उस से प्रार्थना ग्रहण करें, तो आप गंभीर रोग से भी चंगे हो सकते है। कोई व्यक्ति जो सत्य को न जानता हो यदि पाप करें और बीमार पड़ जाऐ, तो वह, उस व्यक्ति से प्रार्थना ग्रहण करके शीघ्र ही चंगा हो सकता है जिसके पास चंगाई का दान हो।

05 सामर्थ के काम करने की शक्ति

यह ऐसे कार्यों को करना है जिसे मनुष्य बिलकुल भी नही कर सकता है, जैसे कि, असाध्य बिमारियों को चंगा करना, मौसम की अवस्था को बदल देना और यहां तक कि मनुष्य के व्यक्तित्व और स्वभाव को भी बदल देना। यह उन्हें दिया जाता है जो परमेश्वर के हृदय के सदृश हो। जब आप पवित्र हो जाते है और आत्मा के गहरे स्तर में जाने के लिए सरगर्म प्रार्थनाऐं संग्रहित करते है तो आप अद्भुत सामर्थ्य का प्रदर्शन कर सकते है।

06 भविष्यद्वाणी

यह पवित्रआत्मा की प्रेरणा के द्वारा, परमेश्वर की इच्छानुसार भविष्य के ज्ञान को प्राप्त करना है। भविष्य की बाते करना, उन्नति, और उपदेश, और शान्ति के लिए बाते करना है (1 कुरू. 14:3).

पवित्रआत्मा की भरपूरी और प्रेरणा के द्वारा पवित्र होकर, निरंतर प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारी होने से ही यह दान प्राप्त किया जा सकता है।

07 आत्माओं की पहचान

यह परमेश्वर की इच्छा को जानना है। इस दान को प्राप्त करने के लिए, आप को पूरी तरह से वचन का पालन करना अवश्यक है। जब आप साफ रीति से पवित्रआत्मा की आवाज़ सुनते है और परमेश्वर की इच्छा पर चलते है तो उस दी गई सामर्थ्य में होकर आप आत्माओं की पहचान कर सकते है। आप भलाई और बुराई, और सत्य और झूठ में पहचान कर सकते है। आप उन लोगों को भी संबोधित कर सकते है जो दुष्ट आत्माओं के द्वारा प्रभावित एवं परेशान है।

08 अन्य भाषा

अन्य भाषा में प्रार्थना करने के द्वारा, हम आत्मा की परिपूर्णता को प्राप्त कर सकते है और परमेश्वर का वचन समझ सकते है क्योंकि, यह हमारी आत्मा की प्रार्थना होती है, इससे हमें सामर्थ्य पाने में मदद मिलती है। हम परिक्षाओं और आजमाइशों को दूर करने के योग्य हो जाऐंगे। जिन चीज़ों को हमें निकाल फेंकना है, उन चीज़ों को दूर करने में हमें इसके द्वारा मदद मिलती है। इस प्रार्थना को केवल हमारी आत्मा और परमेश्वर जानता है इसलिए दुष्ट इसे बाधित नही कर सकता है।

09 भाषाओं का अर्थ बताना।

यह पवित्रआत्मा की प्रेरणा और परिपूर्णता में अन्य भाषा का अर्थ बताने के लिए है। इसे, परमेश्वर की विशेष इच्छानुसार ही केवल चुने हुए लोगों को दिया जाता है। उनके पास, तमाम प्रकार के विचारों को रोकने की निपुणता होनी चाहिए। वे जो असत्य में जीवन जीते है, वे इस दान को प्राप्त नही कर सकते है क्योंकि उनमें शैतान के काम होते है।